INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

राजस्थान कृषि पर्यवेक्षक

(Agriculture Supervisor)

(राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग)

HANDWRITTEN NOTES

भाग - 1 सामान्य हिंदी + राजस्थान का भूगोल

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान कृषि पर्यवेक्षक

(Agriculture Supervisor)

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड

भाग – 1

सामान्य हिंदी + राजस्थान का भूगोल

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स ***"राजस्थान कृषि पर्यवेक्षक (Agriculture Supervisor)"*** *को एक विभिन्न अपने - अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को* ***राजस्थान अधीनस्थ एवं मंत्रालयिक सेवा चयन बोर्ड (RSMSSB)*** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा* ***"राजस्थान कृषि पर्यवेक्षक (Agriculture Supervisor)"*** *में पूर्ण सभव मदद करेंगे ।*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स मे कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूची पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : https://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/gd17e6

Online order करें - https://bit.ly/agri-notes

मूल्य : (₹)	***संस्करण : नवीनतम***

	हिंदी	
क्र.सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	संधि एवं संधि विच्छेद	1
2.	समास एवं समासविग्रह	18
3.	उपसर्ग	35
4.	प्रत्यय	40
5.	पर्यायवाची शब्द	49
6.	विलोम शब्द	60
7.	शब्द युग्म भिन्नार्थक शब्द	76
8.	वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द	88
9.	समश्रुत भिन्नार्थक शब्द / अनेकार्थी शब्द	102
10.	शब्द शुद्धि	104
11.	वाक्यशुद्धि-	109
12.	मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ	116
13.	पारिभाषिक : प्रशासनिक शब्दावली	129
	राजस्थान का भूगोल	
1.	सामान्य परिचय	143
2.	प्रमुख भू – आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएं	162

3.	जलवायु की विशेषताएं	176
4.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	186
5.	प्राकृतिक वनस्पति	208
6.	मृदा	219
7.	प्रमुख फसलें	224
8.	राजस्थान में पशुपालन	237
9.	प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ एवं जल सरंक्षण तकनीकें	244

हिंदी

अध्याय – I

❖ संधि एवं संधि विच्छेद

परिभाषा :- दो वर्णों के परस्पर मेल से उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहते हैं अर्थात् प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दुसरे का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन करते हैं। उसे संधि कहते हैं।

संधि – I.आदेश :- किसी वर्ण के स्थान पर कोई दुसरा वर्ण आ जाये तो ,

जगत्+ईश = जगदीश

वाक्+ईश = वागीश

2. आगम – अनु+छेद = अनुच्छेद

च्

3. लोप – अत:+एव = अतएव

4. प्रकृतिभाव - मन:+कामना = मन:कामना

संयोग – प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दुसरे शब्द का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में कोई परिवर्तन नहीं कर पाए तो उसे संयोग कहते हैं।

उदाहरण : - युग + बोध = युगबोध

संधि के भेद – संधि के तीन भेद होते हैं

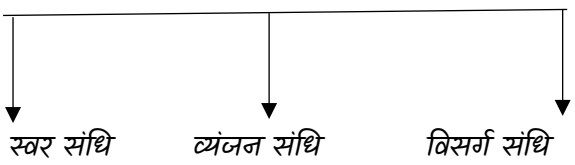

स्वर संधि – दो स्वरों के परस्पर मेल को संधि कहते हैं।

स्वर संधि पाँच प्रकार की होती है :-

1. दीर्घ स्वर संधि
2. गुण स्वर संधि
3. वृद्धि स्वर संधि
4. यण् स्वर संधि
5. अयादि स्वर संधि

हिंदी में अ, आ, इ, ई , उ , ऊ , ए , ऐ , ओ , औ , ऋ , कुल II स्वर होते हैं।

1. **दीर्घ स्वर संधि** - यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर (अ , इ , उ) के बाद समान
ह्रस्व (अ , इ , उ) या दीर्घ स्वर आये तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।

उदा.

अ/आ +अ/आ = आ
इ/ई + इ/ई = ई
उ/ऊ + उ /ऊ = ऊ

(I).अ +अ =आ

अंत्य + अक्षरी = अंत्याक्षरी

अंध + अनुगामी = अंधानुगामी

अधिक + अंश = अधिकांश

अधिक + अधिक = अधिकाधिक

अस्त + अचल = अस्ताचल

आग्नेय + अस्त्र = आग्नेयास्त्र

उत्तर + अधिकार = उत्तराधिकार

उदय + अचल = उदयाचल

उप + अध्याय = उपाध्याय

उर्ध्व + अधर = उर्ध्वधर

ऊह + अपोह = ऊहापोह

काम + अयनी = कामायनी

गत + अनुगतिक = गतानुगतिक

गीत + अंजलि = गीतांजलि

छिद्र + अन्वेषी = छिद्रान्वेषी

जठर + अग्नि = जठराग्नि

जन + अर्दन = जनार्दन

तथ्य + अन्वेषण= तथ्यान्वेषण

तीर्थ + अटन = तीर्थाटन

दाव + अनल = दावानल

दीप + अवली = दीपावली

दाव + अग्नि = दावाग्नि

देश + अंतर = देशांतर

न्यून + अधिक = न्यूनाधिक

पद + अवनत = पदावनत

पर + अधीन = पराधीन

प्र + अंगन = प्रांगण

प्र + अर्थी = प्रार्थी

भग्न + अवशेष = भग्नावशेष

अ + आ = आ

आम + आशय = आमाशय

गर्भ + आधान = गर्भाधान

अन्य + आश्रित = अन्याश्रित

गर्भ + आशय = गर्भाशय

आर्य + आवर्त = आर्यावर्त

फल + आहार = फलाहार

कंटक + आकीर्ण = कंटकाकीर्ण

छात्र +आवास = छात्रावास

कुश + आसन = कुशासन

जन + आकीर्ण = जनाकीर्ण

खग + आश्रय = खगाश्रय

जना +देश =जनादेश

गमन + आगमन = गमनागमन

भय + आक्रान्त = भयाक्रांत

भय + आनक = भयानक

पित्त + आशय = पित्ताशय

धर्म + आत्मा = धर्मात्मा

भ्रष्ट + आचार = भ्रष्टाचार

मेघ + आलय = मेघालय

लोक + आयुक्त = लोकायुक्त

विरह + आतुर = विरहातुर

विवाद + आस्पद = विवादास्पद

शत + आयु = शतायु

शाक + आहारी = शाकाहारी

शोक + आतुर = शोकातुर

सत्य + आग्रह = सत्याग्रह

सिंह + आसन = सिंहासन

स्थान + आपन्न = स्थानापन्न

हिम + आलय = हिमालय

जल + आशय = जलाशय

पंच + आयत = पंचायत

आ + अ = आ

क्रिया + अन्वयन = क्रियान्वयन

मुक्ता + अवली = मुक्तावली

तथा + अपि = तथापि

रचना + अवली = रचनावली

दीक्षा + अंत = दीक्षांत

विद्या + अर्जन = विद्यार्जन

द्राक्षा + अरिष्ट = द्राक्षारिष्ट

श्रद्धा + अंजलि = श्रद्धांजलि

द्राक्षा + अवलेह = द्रक्षावलेह

सुधा + अंशु = सुधांशु

निशा + अंत = निशांत

द्वारका + अधीश = द्वारकाधीश

पुरा + अवशेष = पुरावशेष

महा + अमात्य = महामात्य

आ + आ = आ

कारा + आगार = कारागार

कारा + आवास = कारावास

कृपा + आकांशी = कृपाकांशी

क्रिया + आत्मक = क्रियात्मक

चिंता + आतुर = चिंतातुर

दया + आनंद = दयानंद

द्राक्षा + आसव = द्राक्षासव

निशा + आनन = निशानन

प्रेक्षा + आगार = प्रेक्षागार

प्रेरणा +आस्पद = प्रेरणास्पद

भाषा + आबद्ध = भाषाबद्ध

महा + आशय = महाशय

रचना + आत्मक = रचनात्मक

वार्ता + आलाप = वार्तालाप

श्रद्धा + आलु = श्रद्धालु

(2). इ / ई + इ /ई = ई

इ + इ = ई

अति + इत = अतीत

अति + इन्द्रिय = अतीन्द्रिय

अति + इव = अतीव

अधि + इन = अधीन

अभि + इष्ट =अभीष्ट

कवि + इंद्र = कविन्द्र

प्रति + इत = प्रतीत

प्राप्ति + इच्छा = प्राप्तीच्छा

मणि + इंद्र = मणीन्द्र

मुनि + इंद्र = मुनीन्द्र

रवि + इंद्र = रवीन्द्र

हरि + इच्छा = हरीच्छा

ई + इ = ई

फणी + इंद्र = फणीन्द्र

महती + इच्छा = महतीच्छा

मही + इंद्र = महींद्र

यती + इंद्र = यतीन्द्र

शची + इंद्र = सुधींद्र

ई + ई =ई

नदी + ईश्वर = नदीश्वर

नारी + ईश्वर = नारीश्वर

फणी + ईश्वर = फणीश्वर

मही + ईश = महीश

रजनी + ईश = रजनीश

श्री + ईश = श्रीश

सती + ईश = सतीश

इ + ई = ई

अधि + ईक्षक = अधीक्षक

अधि + ईक्षण = अधीक्षण

अधि + ईश्वर = अधीश्वर

अभि + ईप्सा = अभीप्सा

कपि + ईश = कपीश

क्षिति + ईश = क्षितीश

गिरी + ईश = गिरीश

परि + ईक्षित = परीक्षित

परि + ईक्षा = परीक्षा

प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा

प्रति + ईक्षित =प्रतीक्षित

मुनि + ईश्वर = मुनीश्वर

वारि + ईश = वारीश

वि + ईक्षक = वीक्षक

हरि + ईश = हरीश

शौ + अक = शावक

औ + इ = आवि

शौ + अ=इक = शाविक

औ + उ = आवु

भौ + उक = भावुक

(2). व्यंजन संधि

व्यंजन के बाद स्वर या व्यंजन आने पर उनके मेल से जो विकार उत्पन्न होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं।

नियम : - यदि किसी अघोष व्यंजन (वर्ग का पहला व दूसरा वर्ण) के बाद कोई घोष व्यंजन (वर्ग का तीसरा , चौथा , पांचवा , वर्ण तथा य ,र, ल, व ,ह (अंतःस्थ वर्ण) या कोई स्वर आये तो वर्ग का पहला वर्ण , तीसरे वर्ण में बदल जाता है।

जैसे : - क् → ग्
च् → ज्
ट् + घोष वर्ण → ड
त् → द
प् → ब

षट् + आनन = षडानन

षट् + दर्शन = षड्यंत्र

उदाहरण :-

दिक् + अम्बर = दिगंबर

दिक् + अंत = दिगंत

दृक + अंचल = दृग्गचल

वाक् + ईश = वागीश

प्राक् + ऐतिहासिक = प्रागैतिहासिक

दिक् +गज = दिग्गज

दिक् + ज्ञान = दिग्ज्ञान

वाक् + जाल = वाग्जाल

वाक् + दत्ता = वाग्दत्ता

वाक् + दान = वाग्दान

चित् + रूप = चिद्रूप

सत् +रूप = सद्रूप

चित् + विलास = चिद्विलास

वाक् + देवी = वाग्देवी

सम्यक् + दर्शन = सम्यग्दर्शन

दिक् + बोध = दिग्बोध

दिक् + भ्रम = दिग्भ्रम

ऋक् +वेद = ऋग्वेद

दिक् + विजय = दिग्विजय

सम्यक् + वाणी = सम्यग्वाणी

दिक् + हस्ती = दिग्हस्ती

वाक् + हरि = वग्हरि

अच् + अंत = अजंत

विराट् + आकार = वीराडाकार

षट् + अंग = षडंग

अप् + ज = अब्ज

अप् + द = अब्द

अप् + धि = अब्धि

जगत् + अंबा = जगदंबा

चित् + अणु = चिदणु

चित् + आकार = चिदाकार

जगत् + आत्मा = जगदात्मा

वृहत् + आकार = वृहदाकर

सत् + आचार = सदाचार

सत् + आत्मा = सदात्मा

सत् + आनंद = सदानंद

सत् + आशय = सदाशय

सत् + इच्छा = सदिच्छा

जगत् + ईश = जगदीश

सत् + उपयोग = सदुपयोग

सत् + उपदेश = सदुपदेश

सत् + गति = सद्गति

जगत् + गुरु = जगद्गुरू

सत् + गुण = सद्गुण

पोत् + दार = पोद्दार

विद्युत् + धारा = विद्युद्धारा

सत् + धर्म = सद्धर्म

नियम : -(2) यदि वर्ग के प्रथम वर्ण (क् , च् , ट् , त् , प्) के बाद न् या म् आए तो प्रथम वर्ण अपने ही वर्ग के पाँचवें वर्ण में बदल जाता है |

उदाहरण –

क्
च्
ट्
त्
प्

+ न / म = पाँचवें वर्ण में परिवर्तन

दिक् + नाग = दिङ्नाग

दिक् + मंडल = दिङ्मंडल

वाक् + निपुण = वाङ्निपुण

दिक् + मुख = दिङ्मुख

दिक् + मूढ = दिङ्मूढ

षट् + मास = षण्मास

षट् + मातुर = षण्मातुर

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

जगत् + निवास = जगन्निवास

भवत् + निष्ठ = भवन्निष्ठ

श्रीमत् + नारायण = श्रीमन्नारायण

चित् + मय = चिन्मय

जगत् + माता = जगन्माता

जगत् + मोहिनी = जगन्मोहिनी

सत् + मार्ग = सन्मार्ग

सत् + मति = सन्मति

सत् + मान = सन्मान

उत् + नत = उन्नत

उत् + निद्र = उन्निद्र

उत् + मूलन = उन्मूलन

उत्+ मोचन = उन्मोचन

तत्+ मय = तन्मय

मृद् + मय = मृण्मय

मृद् + मूर्ति = मृण्मूर्ति

मृद् + मयी = मृण्मयी

नियम : - (3) यदि ' म्' के बाद स्पर्श वर्ण आए तो 'म्' को स्पर्श वर्ण के अंतिम वर्ण में बदल देते हैं यदि अन्तःस्थ , ऊष्म या संयुक्त वर्ण आए तो 'म्' को अनुस्वार में बदल देते हैं और यदि कोई स्वर आए तो दोनों को जोड़ देते हैं |

उदाहरण –

अलम् + कृति = अलङ्कृति (अलंकृति)

अलम् + करण = अलङ्करण (अलंकरण)

अलम् + कृत = अलङ्कृत (अलंकृत)

अहम् + कार = अहङ्कार(अहंकार)

भयम् + कर = भयंकर

शम् + कर = शंकर

शुभम् + कर = शुभंकर

सम् + क्षेप = संक्षेप

सम् + तोष = संतोष

सम् + तुष्ट = संतुष्ट

सम् + ताप = संताप

सम् + तति = संतति

सम् + कलन = संकलन

सम् + कल्प = संकल्प

अम् + जन = अंजन

चिरम् + जीवी = चिरंजीवी

धनम् + जय = धनंजय

सम् + क्रांति = सक्रांति

सम् + घटन = संघटन

सम् +गठन = संगठन

सम् + गत = संगत

मम् + जन = मंजन

मृत्यु + जय = मृत्युन्जय

सम् + जय = संजय

सम् + गति = संगति

सम् + गम = संगम

सम् + घनन = संघनन

सम् + घर्ष = संघर्ष

परम् + तप = परंतप

किम् +नर = किन्नर

सम् +निवेश = सन्निवेश

सम् + न्यासी = संन्यासी

सम् + निहित =सन्निहित

सम् + निकट = सन्निकट

नियम :- यदि 'म्' के पश्चात 'क्' से 'म्' तक के स्पर्श व्यंजन के अलावा ऊष्म व्यंजन (श्, ष् , स् , ह्) अथवा अंतस्थ व्यंजन (य् , र् , ल् , व्) आए तो 'म्' (अनुस्वार) में बदल जाता है |

उदाहरण –

सम् + रचना = संरचना

सम् + लिप्त = संलिप्त

सम् + वरण = संवरण

सम् + वाहक = संवाहक

सम्म + श्लेष्ण = संश्लेषण

सम् + हति = संहति

सम् + हिता = संहिता

सम् + हार = संहार

सम् + रक्षक = संरक्षक

सम् + लग्न = संलग्न

सम् + लाप = संलाप

सम् + वर्धन = संवर्धन

सम् + वाद = संवाद

सम् + विधान = संविधान

सम् + शय = संशय

सम् + स्मरण = संस्मरण

स्वयम् + वर = स्वयंवर

नियम :- (5) यदि 'द्' के बाद क्, त्, थ् , प् , स् आये तो 'द्' वर्ण 'त्' वर्ण के रूप में बदल जाता है |

उदाहरण –

आपद् + काल = आपत्काल

उद् + कट = उत्कट

उद् + कीर्ण = उत्कीर्ण

उद् + कोच = उत्कोच

उद् + क्षिप्ति = उत्क्षिप्त

उपनिषद् + कथा = उपनिषत्कथा

तद् + काल = तत्काल

उद् + सव = उत्सव

तद् + क्षण = तत्क्षण

विपद् + काल = विपत्काल

शरद् + काल = शरत्काल

उद् +तर = उत्तर

उद् + ताप = उत्ताप

पयः + निधि = पयोनिधि

पुरः + गामी = पुरोगामी

पुरः + हित = पुरोहित

मनः + ज = मनोज

मनः + दशा = मनोदशा

मनः + धारा = मनोधारा

मनः + बल = मनोबल

मनः + भाव = मनोभाव

मनः + मंथन = मनोमंथन

मनः + रथ = मनोरथ

मनः + रम = मनोरम

शिरः + धार्य = शिरोधार्य

शिरः + भाग = शिरोभाग

नियम (2) :- यदि विसर्ग(:) से पहले 'अ' को छोड़कर अन्य कोई स्वर तथा विसर्ग के बाद किसी भी वर्ग का तीसरा , चौथा, पाँचवा या अन्तस्थ वर्ण या कोई स्वर आए तो विसर्ग का 'र' हो जाता है |

- इः / ईः/उः + घोष व्यंजन = विसर्ग

आयुः + वेद = आयुर्वेद

आविः + भाव = आविर्भाव

आविः + भूत = आविर्भूत

आशीः + वाद = आशीर्वाद

चतुः + दिशा = चतुर्दिशा

धनुः + ज्ञान = धनुर्ज्ञान

धनुः + वेद = धनुर्वेद

प्रादुः + भाव = प्रादुर्भाव

बहिः + भाग = बहिर्भाग

बहिः + मुखी = बहिर्मुखी

स्वः + ग = स्वर्ग(अपवाद)

धनुः + धनुर्धारी

नियम (3) :- यदि इः/उः के बाद क/ प / म / आए तो विसर्ग का 'ष' वर्ण हो जाता है |

उदाहरण –

आविः + कार = अविष्कार

चतुः + कोण = चतुष्कोण

चतुः + कष्ठ = चतुष्कष्ठ

आयुः + मती = आयुष्मती

चतुः + पद = चतुष्पद

चतुः + पथ = चतुष्पथ

चक्षुः + मान = चक्षुष्मान

ज्योतिः + मती = ज्योतिष्मती

बहिः + कृत = बहिष्कृत

बहिः + कार = बहिष्कार

वपुः + मान = वपुष्मान

नियम (4) :- यदि विसर्ग के बाद च , छ , श आए तो विसर्ग 'श' में बदल जाता है |

उदाहरण –

अंतः + चेतना = अंतश्चेतना

आः + चर्य = आश्चर्य

कः + चित् = कश्चित्

तपः + चर्या = तपश्चर्या

पुरः + चरण = पुरश्चरण

मनः + चेतना = मश्चेतना

यशः + शरीर = यशश्शरीर

यशः + शेष = यशश्शेष

(2). विसर्ग + मूर्धन्य अघोष व्यंजन (ट) आए तो विसर्ग का 'ष्' हो जाता है|

उदाहरण –

धनुः + टंकार = धनुष्टंकार

अध्याय – 8

वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द

अच्छी रचना के लिए आवश्यक है कि कम से कम शब्दों में विचार प्रकट किए जाए। और भाषा में यह सुविधा भी होनी चाहिए कि वक्ता या लेखक कम से कम शब्दों में अर्थात् संक्षेप में बोलकर या लिखकर विचार अभिव्यक्त कर सके। कम से कम शब्दों में अधिकाधिक अर्थ को प्रकट करने के लिए 'वाक्यांश या शब्द-समूह के लिए एक शब्द' का विस्तृत ज्ञान होना आवश्यक है। ऐसे शब्दों के प्रयोग से वाक्य-रचना में संक्षिप्तता, सुन्दरता तथा गंभीरता आ जाती है। भाषा में कई शब्दों के स्थान पर एक शब्द बोल कर हम भाषा को प्रभावशाली एवं आकर्षक बनाते हैं।

कुछ वाक्यांशों के लिए एक शब्द –

'अ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जो सबसे आगे रहता हो - अग्रणी
- किसी आदरणीय का स्वागत करने के लिए चलकर कुछ आगे पहुँचना - अगवानी
- जिसकी गहराई या थाह का पता न लग सके - अगाध
- जो गाये जाने योग्य न हो - अगेय
- जो छेदा न जा सके - अछेद्य
- जिसका कोई शत्रु पैदा ही न हुआ हो - अजातशत्रु
- जिसे जीता न जा सके – अजेय
- जिसके खंड या टुकड़े न किये गये हों - अखंडित
- जो खाने योग्य न हो - अखाद्य
- जो गिना ना जा सके - अगणित/अनगिनत
- जिसके अंदर या पास न पहुँचा जा सके - अगम्य
- जिसके पास कुछ भी न हो - अकिंचन
- जिसमें कुछ करने की क्षमता न हो - अक्षम
- जिसका खंडन न किया जा सके - अखंडनीय
- जिसका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा न हो - अगोचर
- दूर तक फैलने वाला अत्यधिक नाशक आग - अग्निकांड
- जिसका जन्म पहले हुआ हो - अग्रज
- जो किसी देन या पारिश्रमिक मदे पहले से ही सोचे - अग्रिम
- जो अंडे से जन्म लेता है - अंडज
- किसी कथा के अन्तर्गत आने वाली कोई दूसरी कथा - अंतर्कथा
- राजभवन के अंदर महिलाओं का निवास स्थान - अंतपुर
- मन में आप से उत्पन्न होने वाली प्रेरणा - अंतप्रेरणा
- अंक में सोने वाला - अंकशायी
- अंक में स्थान पाया हुआ – अंकस्थ
- मूलकथा में आने वाला प्रसंग , लघु कथा - **अंतःकथा**
- महल का वह भाग जहाँ रानियाँ निवास करती हैं – **अंतःपुर**
- धरती और स्वर्ग (आकाश) के बीच का स्थान - **अंतरिक्ष**
- मन में होने वाला स्वाभाविक ज्ञान – **अंतर्ज्ञान**
- जो सबके मन की बात जनता हो – **अंतर्यामी**
- वह विद्यार्थी जो आचार्य के पास ही निवास करता हो - **अंतेवासी**
- जिसका जन्म निम्न वर्ण में हुआ हैं – **अंत्यज**
- अपने हिस्से या अंश के रूप में कुछ देना - **अंशदान**
- जिसको कहा न जा सके - **अकथनीय**
- जिसको काटा न जा सके **अकाट्य**
- जिसके पास कुछ भी नहीं हो - **अकिंचन**
- जो पासे के खेल में कुशल हो - **अक्षधूर्त**
- जो क्षमा न किया जा सके - **अक्षम्य**
- जिसका खंडन ने किया जा सके - **अखंड / अखंडनीय**
- जो खाने योग्य न हो - **अखाद्य**
- जहाँ पहुँचा न जा सके - **अगम्य**
- जिसकी निंदा न की गई हो - **अगर्हित**
- जो बहुत घर हो - **अगाध**
- जो इंद्रियों (गो)द्वारा न जाना जा सके - **अगोचर**
- जो पहले जन्मा हो (बड़ा भाई) - **अग्रज**
- आगे का विचार करने वाला - **अग्रसोची**
- जिस पर चिंतन न किया गया हो - **अचिंतित**
- जो अपने स्थान या स्थिति से अलग न किया जा सके - **अच्युत**
- प्रसूता (संतान को जन्म देनेवाली) को दिया जाने वाला भोजन - **अछवानी**
- जिसका जन्म न हो - **अज / अजन्मा**
- जो कभी बूढ़ा न हो - **अजर**
- जिसका कोई शत्रु न जन्मा हो - **अजातशत्रु**
- जिसको जीता न जा सके - **अजेय**
- जो कुछ नहीं जानता हो - **अज्ञ / अज्ञानी**
- जिसका पता न हो - **अज्ञात**
- जिसे जाना न जा सके - **अज्ञेय**
- जो अपनी बात से टले नहीं - **अटल**
- न टूटने वाला - **अटूट**
- जो अपनी जगह से न डिगे - **अडिग**
- अंड से जन्म लेने वाला - **अंडज**
- किसी बात पर व्यर्थ प्रलाप करना - **अतिकथा**
- मर्यादा का उल्लंघन करके किया हुआ - **अतिकृत**

- जिसके आगमन की तिथि निश्चित न हो - **अतिथि**
- आवश्यकता से अधिक बरसात - **अतिवृष्टि**
- किसी बात को अत्यधिक बढ़ाकर कहना - **अतिश्योक्ति**
- जिसका ज्ञान इंद्रियों के द्वारा न हो - **अतींद्रिय**
- जो व्यतीत हो गया हो - **अतीत**
- जो ऊँचा न हो - **अतुंग**
- शीघ्रता का अभाव - **अत्वरा**
- जिसकी गहराई का पता न लग सके - **अथाह**
- जिसका दमन न किया जा सके - **अदम्य**
- जिसे देखा न जा सके - **अदृश्य**
- जो पहले न देखा गया हो - **अदृष्टपूर्व**
- जो आज तक से संबंध रखता हैं - **अद्यतन**
- जिसके बराबर दूसरा न हो - **अद्वितीय**
- जो ऋण लेता हैं (कर्जदार) - **अधमर्ण**
- जिस पर किसी ने अधिकार कर लिया हो - **अधिकृत**
- पहाड़ के ऊपर की (समतल) जमीन (टेबिल लैंड) - **अधित्यका**
- किसी पक्ष का समर्थन करने वाला वकील - **अधिवक्ता**
- वैधानिक सूचना जो सरकार द्वारा राजपत्र में प्रकाशित हो - **अधिसूचना**
- अध्ययन किया हुआ - **अधीत**
- नीचे की ओर मुख किया हुआ - **अधोमुखी**
- राष्ट्रपति / राज्यपाल द्वारा जारी आदेश/ सीमित अवधि का आदेश - **अध्यादेश**
- ज्ञात या कल्पित तथ्यों के आधार पर लिया गया निर्णय - **अध्याहरण**
- वह स्त्री जिसके पति ने दूसरा विवाह कर लिया हो - **अध्यूढ़ा**
- जो बिना अंतर (गैप)के घटित हो - **अनंतर**
- अन्य से संबंध न रखनेवाला, किसी एक में ही आस्था रखने वाला - **अनन्य**
- जिसका कोई दूसरा उपाय न हो - **अनन्योपाय**
- जिसे किसी बात का पता न हो - **अनभिज्ञ**
- जिसके विषय में कोई ज्ञान न हो - **अनवगत, अज्ञात**
- जो सदा से चलता आ रहा हैं - **अनवरत / सनातन**
- जिसका कोई आदि / प्रारंभ न हो - **अनादि**
- कनिष्टा (सबसे चोटी) और मध्यमा के बीच की ऊँगली - **अनामिका**
- जो दोहराया न गया हो - **अनावर्त**
- जो ढका हुआ न हो - **अनावृत / अपरिछिन्न**
- वर्षा का बिलकुल न होना - **अनावृष्टि**
- जिसे बुलाया न गया हो - **अनाहूत**
- वह सिद्धांत जो हर वस्तु को नश्वर मानता हो - **अनित्यवादी**
- पलक को झपकाए बिना - **अनिमेष , निर्निमेष**
- जिसका विरोध न हुआ हो या न हो सके - **अनिरुद्ध , अविरोधी**
- जिसका निवारण न किया जा सके / जिसे करना आवश्यक हो - **अनिवार्य**
- किसी के दुःख से दुखी होकर उस पर दया करना - **अनुकंपा**
- जो अनुग्रह (कृपा) से युक्त हो - **अनुगृहित**
- किसी छोटे पर प्रसन्न होकर उसका उपकार करना - **अनुग्रह**
- किसी कार्य के लिए दी जाने वाली सहायता - **अनुदान**
- जिसकी उपमा न दी जा सके - **अनुपम**
- जिसका अनुभव किया गया हो - **अनुभूत**
- किसी मत या प्रस्ताव का समर्थन करने की क्रिया - **अनुमोदन**
- किसी संप्रदाय या सिद्धांत का समर्थन करने वाला - **अनुयायी**
- प्रेम उत्पन्न करने वाला - **अनुरंजक**
- वह व्यक्ति जो किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति आसक्त हो - **अनुरक्त**
- परंपरा से चली आई कथा - **अनुश्रुति**
- पहले लिखे गए पत्र का स्मरण करते हुए लिखा गया पत्र - **अनुस्मारक**
- अनुवाद किया हुआ / जिस ग्रंथ का अनुवाद हो गया हो - **अनूदित**
- जिसका मन कहीं अन्यत्र लगा हो - **अन्यमनस्क**
- नीचे की ओर लाना या खींचना - **अपकर्षक**
- जो पहले पढ़ा न गया हो - **अपठित**
- जो भोजन रोगी के लिए निषिद्ध हैं - **अपथ्य**
- वह समय जो दोपहर के बाद आता हैं - **अपराह्न**
- आवश्यकता से अधिक धन हो तो उसका त्याग - **अपरिग्रह**
- जिसे मापा न जा सके - **अपरिमेय**
- साधारण नियम के विरुद्ध बात - **अपवाद**
- जो धन को व्यर्थ ही खर्च करता हो - **अपव्ययी**
- जिसकी आकृति का कोई और न मिले - **अप्रतिरूप**
- जो प्रमाण से सिद्ध ने हो सके - **अप्रमेय**
- जिस वस्त्र को पहना न गया हो , न जोता हुआ खेत - **अप्रहत**
- जिस पर अभियोग (अपराध का आरोप) लगाया गया हो - **अभियुक्त**
- जो किसी पर अभियोग लगाए - **अभियोगी**
- किसी विशेष वस्तु की हार्दिक इच्छा - **अभिलाषा**
- किसी काम के बार-बार करने की तीव्र इच्छा - **अभीप्सा**
- जिसको भेदा न जा सके - **अभेद्य**

- शीतल, मंद व सुगंधित वायु - त्रिविध वायु
- किसी भी पक्ष का समर्थन न करने वाला - तटस्थ
- जो तर्क के आधार पर ठीक सिद्ध हो - तर्कसंगत
- वह जो बराबर तपस्या करता है - तपस्वी
- तैर कर पार होने की इच्छा रखने वाला – तितीर्षु
- वह राजकीय धन जो किसानों की सहायता हेतु दिया जाता है - **तकाबी**
- जो किसी कार्य के चिंतन में डूबा हुआ हो - **तल्लीन**
- जो चोरी –छिपे माल लाता –ले जाता हो - **तस्कर**
- दैहिक, दैविक और भौतिक दुख - **तापत्रय**
- तैरकर पार करने के इच्छा - **तितीर्षा**
- बाणों को रखने का साधन – **तूणीर / तरकस**
- जो त्याग देने योग्य हो – **त्याज्य**
- वह व्यक्ति जो छुटकारा दिलाता है/ रक्षा करता है - **त्राता**

'थ' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जमी हुई गाढ़ी चीज की मोटी तह - थक्का
- चौपायों के बाँधने का स्थान - थान
- व्यापारियों द्वारा किया जाने वाला व्यापार - थोक व्यापार
- कुछ निश्चित लंबाई का कपड़ा - थान
- अनावश्यक मांसल और मोटा शरीर - थुलथुल
- किसी के पास रखी हुई दूसरे की वस्तु - थाती/धरोहर/अमानत
- पुलिस की बड़ी चौकी - थाना
- थाने का प्रधान अधिकारी – थानेदार

'द' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जिसे दण्ड दिया जा सकता है या दण्डित किया जाना चाहिए - दंडनीय
- दिन के समय अपने प्रिय से मिलने जाने वाली नायिका - दिवाभिसारिका
- देखने की इच्छा - दिदृक्षा
- व्यक्ति जो अपने ऋण चुकता करने में असमर्थ हो गया हो - दिवालिया
- जिसका चित्त किसी एक बात पर स्थिर न हो - दुचित्तता
- जिसकी बाहें लंबी हो - दीर्घबाहु
- जिसे भेदना या तोड़ना कठिन हो - दुर्भेद्य
- नापाक इरादों से की जाने वाली मंत्रणा या साजिश - दुरभिसंधि
- पुत्री का पुत्र - दौहित्र
- जिसे देवता भी पूजते हैं - देवाराध्य
- वह जो अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहे - दृढ़प्रतिज्ञ
- जिसके पेट में माँ ने रस्सी बांध दी थी - दामोदर
- पुत्री की पुत्री - दौहित्री
- काला पानी की सजा पाया हुआ कैदी - दामुल कैदी
- जो द्वार की रक्षा करता है – द्वारपाल
- लोगों में परंपरा से चली आई कथा - **दंतकथा**
- संकुचित विचार रखनेवाला – **दकियानूस**
- जिसके पेट को माँ ने रस्सी से बांधा था (दाम =रस्सी, उदर +पेट) - **दामोदर**
- कृष्ण का सारथि - **दारुक**
- जंगल में फैलनेवाली आग - **दावाग्नि / दावानल**
- देने करने की इच्छा – **दित्सा**
- जो सपना दिन (दिवा) में देखा जाता है - **दिवास्वप्न**
- जिसको पकड़ने में काफी कठिनाई हो - **दुरभिग्रह / दुर्गाह्य**
- अनैतिक और आपराधिक कार्य के लिए की जाने वाली मंत्रणा / साजिस / समझौता - **दुरभिसंधि**
- अनुचित बात के लिए आग्रह करना - **दुराग्रह**
- जो बुरा आचरण करता हो - **दुराचारी**
- जिसको प्रसन्न करना कठिन हो - **दुराराध्य**
- वह मार्ग जो चलने में कठिनाई पैदा करता है – **दुर्गम**
- जिसे कठिनाई से जाना जा सके – **दुर्ज्ञेय**
- जिसका दमन कठिन हो - **दुर्दम्य / दुर्दांत / दुर्धर्ष**
- जो अत्यन्त कष्ट से निवारित हो – **दुर्निवार**
- जो कठिनाई से समझ में आता है - **दुर्बोध**
- ऐसा विपरीत समय (अकाल) जिस समय भिक्षा भी बड़ी मुश्किल से मिलती है – **दुर्भिक्ष**
- जिसको लांघना या पार करना कठिन हो - **दुर्लंघ्य**
- जिसको कठिनाई से वहन / धारण किया जा सके - **दुर्वह**
- जिसमें ख़राब आदतें हों - **दुर्व्यसनी**
- जो काम कठिन हो - **दुष्कर**
- जिसको मापना कठिन हो - **दुष्परिमेय**
- जो कठिनाई से साधा जाय - **दुस्साध्य /दुःसाध्य**
- आगे की बात भी सोच लेने वाला व्यक्ति - **दूरदर्शी**
- जिसे देवता भी पूजते हों - **देवाराध्य**
- भिन्न भिन्न देशो की यात्रा - **देशाटन**
- जो शीघ्रता से चलता हो - **द्रुतगामी**
- दो बार जन्म लेने वाला (ब्राह्मण, दाँत, पक्षी, नाख़ून) - **द्विज**

'ध' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जिस पर धारियाँ बनी हों - धारीदार
- ध्यान या विचार करने वाला - ध्याता
- जो धन देता हो - धनद/कुबेर
- थन से निकला हुआ दूध – धीरोषण
- यात्रियों के लिए धर्मार्थ बना हुआ घर - धर्मशाला
- धुरी को धारण करने वाला अर्थात् आधारभूत कार्यों में प्रवीण - धुरंधर
- धारा के रूप में नियोजित क्रम से आगे बढ़ने वाला - धारावाहिक
- कृपा आदि के बदले में कृतज्ञता सूचक शब्द - धन्यवाद
- धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करने वाला - धर्मात्मा
- धारण करने वाला - धारक
- शूरवीर किन्तु अभिमानी नायक - धीरोद्धात
- शूरवीर किन्तु क्रीड़ाप्रिय नायक – धीरललित
- धनुष धारण करने वाला - **धनर्धुर**
- किसी के पास रखी हुई दूसरे की वस्तु - **धरोहर / थाती**
- सदा प्रसन्न रहने वाला या कला –प्रेमी नायक - **धीरललित**
- श्रेष्ठ गुणों से संपन्न शूरवीर नायक - **धीरोदात्त**
- ध्यान विचार करने योग्य - **ध्यातव्य**
- ध्यान या विचार करनेवाला / वाली - **ध्याता / ध्यात्री**
- ध्यान करने योग्य अथवा लक्ष्य - **ध्येय**

'न' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- जो ईश्वर पर विश्वास नहीं करता - नास्तिक
- जो अभी अभी उत्पन्न हुआ हो - नवजात/सद्यजात
- जो नृत्य करता है - नर्तक/नृत्यकार
- जो नीचे लिखा गया है - निम्नलिखित
- जिसकी उपमा न दी जा सके - निरुपम
- जिसकी नाक कट गई हो - नकटा
- जो तेजहीन हो - निस्तेज
- जो एक अक्षर भी न जानता हो - निरक्षर
- जो निंदा के योग्य हो - निन्दनीय
- जो अपने लाभ या स्वार्थ का ध्यान न रखता हो - निस्वार्थ
- जो उत्तर न दे सके - निरुत्तर
- जो न्याय जानता हो - नैयायिक
- दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा - नैऋत्य
- जो कामना रहित हो/जिसे फल की इच्छा न हो - निष्काम
- जो चिंता से रहित हो – निश्चिन्त
- जो सत्व, रज और तम तीनों गुणों से परे हैं - निर्गुण
- जिसकी सहायता करने वाला कोई न हो - निस्सहाय
- जो प्रकार की चिंताओं से रहित हो - नियंता
- जिसका कोई रूपाकार न हो - निराकार
- नाक से रक्त बहने का रोग - नकसीर
- नायिका के नख से शिख तक के अंगों का सौन्दर्य वर्णन - नखशिख वर्णन
- इन्द्र का बाग – नन्दनवन
- सम्मान में दी जाने वाली भेंट - **नजराना**
- जो आकाश में विचरण करता है (पक्षी) - **नभचर (नभश्चर)**
- जिस स्त्री का विवाह अभी हुआ हो - **नवोढ़ा**
- जिसका उदय हाल में हुआ हो - **नवोदित**
- जो वस्तु नाशवान हो - **नश्वर**
- लताओं से आच्छादित रमणीय स्थान - **निकुंज**
- जिसका कोई अर्थ न हो - **निरर्थक**
- जिसकी कोई अवधि निश्चित न हो – **निरवधि**
- जिसके अवयव न हो - **निरवयव**
- जिसका कोई आकार / रूप न हो - **निराकार**
- जिससे किसी प्रकार की हानि न हो - **निरापद**
- जो उत्तर न दे सके – **निरुत्तर**
- जिसकी किसी से उपमा / तुलना न की जा सके - **निरुपम**
- जिसमें दया का भाव न हो – **निर्दय / निष्ठुर**
- जो ममत्व से रहित हो - **निर्मम**
- व्यापारिक वस्तुओं को किसी दूसरे देश में भेजने का काम - **निर्यात**
- जिसमें कोई विकार न हो - **निर्विकार**
- रात में विचरण करने वाला - **निशाचर**
- अर्द्धरात्रि का समय - **निशीथ**
- जो सब प्रकार की चिंताओं से रहित हो - **निश्चिंत**
- जसमें कोई कंटक/अड़चन न हो – **निष्कंटक**
- जिसके कोई दाग /कलंक न हो - **निष्कलंक**
- रंग मंच पर पर्दे के पीछे का स्थान - **नेपथ्य**
- जो नीति के अनुकूल हो - **नैतिक**

'प' से शुरू होने वाले एकल शब्द

- गाँव की वह सभा जिसमें पंच लोग झगड़ों का निपटारा करते हैं - पंचायत
- जो पढ़ने में रोचक लगे - पठनीय

भाड़ झोंकना	=	तुच्छ कार्य करना/व्यर्थ समय गुजारना
भरी थाली को लात मारना	=	जीविकोपार्जन के साधन ठुकरा देना
भैंस के आगे बीन बजाना	=	मूर्ख के समक्ष बुद्धिमानी की बातें करना व्यर्थ
बाल-बाल बचना	=	कुछ भी हानि न होना
बाछे खिल जाना	=	आश्चर्य जनक हर्ष
मन खट्टा होना	=	मन फिर जाना/जी उचाट होना
मन के लड्डू खाना	=	कोरी कल्पनाएँ करना
मुँह में पानी भर आना	=	इच्छा होना/जी ललचाना
मुँह में लगाम न लगाना	=	अनियंत्रित बातें करना
मुट्ठी गर्म करना	=	रिश्वत देना, लेना
मुँह की खाना	=	हार जाना/हार मानना
मक्खियाँ मारना	=	बेकार भटकना/बैठना
मक्खीचूस होना	=	बहुत कंजूस होना
मुँह पर हवाइयाँ उड़ना	=	चेहरा फक पड़ जाना
मन मसोस कर रह जाना	=	इच्छा को रोकना
मुँह काला करना	=	कलंकित होना
मुँह की खाना	=	बातों में हारना/अपमानित होना
मुँह तोड़ जवाब देना	=	कठोर शब्दों में कहना
मन मारना	=	उदास होना/इच्छाओं पर नियंत्रण

लोकोक्तियाँ एवं कहावतें

अपना रख, पराया चख	-	अपना बचाकर दूसरों का माल हड़प करना
अपनी करनी पार उतरनी	-	स्वयं का परिश्रम ही काम आता है।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता	-	अकेला व्यक्ति शक्ति हीन होता है।
अधजल गगरी छलकत जाए	-	ओछा आदमी अधिक इतराता है।
अंधों में काना राजा	-	मूर्खों में कम ज्ञान वाला भी आदर पाता है।
अंधे के हाथ बटेर लगना	-	अयोग्य व्यक्ति को बिना परिश्रम संयोग से अच्छी वस्तु मिलना
अंधा पीसे कुत्ता खाय	-	मूर्खों की मेहनत का लाभ अन्य उठाते हैं असावधानी से अयोग्य को लाभ
अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया	-	अवसर निकल जाने पर पछताने से कोई लाभ चुग गई खेत नहीं
अन्धे के आगे रोवें अपने नैना खावें	-	निर्दय व्यक्ति या अयोग्य व्यक्ति से सहानुभूति की पेक्षा करना व्यर्थ है
अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है	-	अपने क्षेत्र में कमजोर भी बलवान बन जाता है।
अन्धेर नगरी चौपट राजा	-	शासन की अयोग्यता से सर्वत्र अराजकता आ ना।
अन्धा क्या चाहे दो आँखें	-	बिना प्रयास वांछित वस्तु का मिल जाना।
अक्ल बड़ी या भैंस	-	शारीरिक बल से बुद्धिबल श्रेष्ठ होता है।
अपना हाथ जगन्नाथ	-	अपना काम अपने ही हाथों ठीक रहता है।
अपनी-अपनी ड़पली अपना-अपना राग	-	तालमेल का अभाव/ सबका अलग-अलग मत ना/एकमत क अभाव
अंधा बाँटे रेवडी फिर-फिर अपनों को देय	-	स्वार्थी व्यक्ति अधिकार पाकर अपने लोगों की सहायता करता है।
अंत भला तो सब भला	-	कार्य का अन्तिम चरण ही महत्त्वपूर्ण होता है।
आ बैल मुझे मार	-	जानबूझ कर मुसीबत में फंसना

आम के आम गुठली के दाम	-	हर प्रकार का लाभ/एक काम से दो लाभ
आँख का अंधा नाम नयन सुखः	-	गुणों के विपरीत नाम होना।
आगे कुआँ पीछे खाई	-	दोनों/सब ओर से विपत्ति में फँसना
आप भला जग भला	-	अपने अच्छे व्यवहार से सब जगह आदर मिलताहै।
आये थे हरि भजन को ओटन लगे	-	उद्देश्य से भटक जाना/श्रेष्ठ काम करने क पासकी बजाए तुच्छ कार्य करना / कार्य विशेषकी उपेक्षा कर किसी अन्य कार्य में लग जाना।
आधा तीतर आधा बटेर	-	अनमेल मिश्रण/बेमेल चीजें जिनमें सामंजस्य का अभाव हो।
इन तिलों में तेल नहीं	-	किसी लाभ की आशा न होना
आठ कनौजिए नौ चूल्हे	-	फूट होना
आँख का अंधा गाँठ का पूरा	-	मूर्ख किंतु संपन्न ।
आँख का अंधा नाम नयनसुख	-	गुणों के विपरीत नाम ।
आगे नाथ न पीछे पगहा	-	पूर्णतः अनियंत्रित ।
आधी छोड़ एक को ध्यावे, आधी मिले न सारी जावे	-	लोभ में सहज रूप से उपलब्ध वस्तु को भी त्यागना पड़ सकता है ।
इमली के पात पर दंड पेलना	-	सीमित साधनों से बड़ा कार्य करने का प्रयास करना ।
उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे	-	अपना अपराध न मानना औरपूछने वाले को ही दोषी ठहराना।
उल्टे बाँस बरेली को	-	विपरीत कार्य या आचरण करना
ऊधो का न लेना, न माधो का देना	-	किसी से कोई मतलब न रखना / बसे अलग।
ऊँची दुकान फीका पकवान	-	वास्तविकता से अधिक दिखावा । दिखावा ही दिखावा। केवल बाहरी दिखावा।
ऊँट के मुँह में जीरा	-	आवश्यकता की नगण्य पूर्ति
ऊखली में सिर दिया तो मूसल	-	जब दृढ़ निश्चय कर लिया तो का क्या इरबाधाओं से क्या घबराना
ऊँट किस करवट बैठता है	-	परिणाम में अनिश्चितता होना।
उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई -	-	बेशर्म आदमी पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकता ।
उल्टे बाँस बरेली को	-	जहाँ जो चीज उपलब्ध हो पैदा होती हो, उल्टे वहीं पर वह वस्तु पहुँचाना ।
ऊँट किस करवट बैठता है	-	ऐसी घटना की प्रतीक्षा जिसका अनुमान लगाना असंभव है ।
एक पंथ दो काज	-	एक काम से दोहरा लाभ/एक तरकीब से दो कार्य करना/एक साधन से दो कार्य करना।
एक साधे सब सधे	-	एक-एक करके कार्य करने पर क्रमशः सब कार्य ठीक होना ।
एक अनार सौ बीमार	-	वस्तु कम, चाहने वाले अधिक/ एक स्थान के लिये सैकड़ों प्रत्याशी
एक मछली सारा तालाब गंदा	-	एक की बुराई से साथी भी बदनाम कर देते/होते।
एक म्यान में दो तलवारें नहीं	-	दो प्रशासक एक ही जगह एक समा सकतीसाथ शासन नहीं कर सकते।
एक हाथ से ताली नहीं बजती	-	लड़ाई का कारण दोनों पक्ष होते हैं।
एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा	-	बुरे से और अधिक बुरा होना/ एक बुराई के साथ दूसरी बुराई का जुड़ जाना।
ओस चाटे प्यास नहीं बुझती	-	अल्प मात्रा में प्राप्ति से बड़ी आवश्यकता पूरी नही होती ।
कागज की नाव नहीं चलती	-	बेइमानी से किसी कार्य में सफलता नहीं मिलती।
कागहि कहा कपूर चुगाए, स्वान न्हवाए गंग	-	दुर्जन की प्रकृति खूब प्रयत्न करने पर भी नहीं बदलती ।
काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती	-	झूठ बार-बार नहीं चलता ।

6. राजस्थान के किस जिले से अधिकतम जिलों की सीमाएँ स्पर्श करती है, वह है?

A. अजमेर B. पाली

C. भीलवाड़ा D. नागौर

उत्तर – B

7. निम्न में से राजस्थान का कौन सा शहर पाकिस्तान सीमा के निकट है?

A. बीकानेर B. जैसलमेर

C. गंगानगर D. हनुमानगढ़

उत्तर – C

8. राजस्थान में कौन सा क्षेत्र मालव क्षेत्र के नाम से जाना जाता है?

A. बांसवाड़ा - प्रतापगढ़ B. डूंगरपुर – प्रतापगढ़

C. झालावाड़ - प्रतापगढ़ D. बूंदी - झालावाड़

उत्तर – C

9. राजस्थान का प्रवेश द्वार किसे कहा जाता है?

A. झालावाड़ B. धौलपुर

C. हनुमानगढ़ D. भरतपुर

उत्तर – D

10. मध्य प्रदेश का वह जिला जो तीन ओर से राजस्थान से घिरा हुआ है?

A. नीमच B. रतलाम

C. मंदसौर D.श्योपुर

उत्तर – A

अध्याय – 2

प्रमुख भू – आकृतिक प्रदेश एवं उनकी विशेषताएं

नोटः- प्रिय पाठकों जैसा कि आपको ज्ञात है कि राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है। इस विशाल राज्य में रेगिस्तान, नदियाँ, पर्वत एवं पहाडियाँ, पठार अलग - अलग क्षेत्रों में पाये जाते है । इनकी वजह से राजस्थान को चार भौतिक प्रदेशों में बाँटा गया है-

1. पश्चिमी मरूस्थलीय प्रदेश – वह क्षेत्र जहाँ पर रेगिस्तान पाया जाता है
2. अरावली पर्वतमाला - वह क्षेत्र जहाँ पर अरावली पर्वतमाला का विस्तार है।
3. पूर्वी मैदानी प्रदेश- वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश **दोमट व जलोढ़ मिट्टी** पाई जाती हैं
4. दक्षिणी - पूर्वी पठारी प्रदेश - वह क्षेत्र जहाँ पर अधिकांश मात्रा में **काली मिट्टी** पाई जाती है, इस क्षेत्र को **हाड़ौती का पठार** भी कहते हैं।

प्रिय छात्रों, इन चारों प्रदेशों का विस्तृत वर्णन इस प्रकार है-

- **पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेशः-**

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि राजस्थान का पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र टेथिस सागर का अवशेष है, और अरावली क्षेत्र गोंडवाना लैंड का हिस्सा है।

पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश का सामान्य परिचय :-

वर्तमान में रेगिस्तान का विस्तार राज्य के कुल 61.11 प्रतिशत हिस्से पर है।

नोटः- पहले ये क्षेत्र केवल 58 प्रतिशत भाग पर ही सीमित था, लेकिन वर्तमान में अरावली पर्वतमाला के कटी – फटी होने के कारण मरुस्थल का विस्तार पश्चिम से पूर्व की ओर बढ़ रहा है।

अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में कुल 12 जिले स्थित है, उनमें से **12 जिलों में रेगिस्तान का विस्तार** है । यह जिले निम्न प्रकार है-

1. बीकानेर संभाग - बीकानेर, चुरू, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर
2. जोधपुर संभाग - जोधपुर, जैसलमेर, जालौर, बाड़मेर, पाली (अपवाद- सिरोही)
3. शेखावाटी क्षेत्र - सीकर, झुंझुनू
4. अजमेर संभाग – नागौर

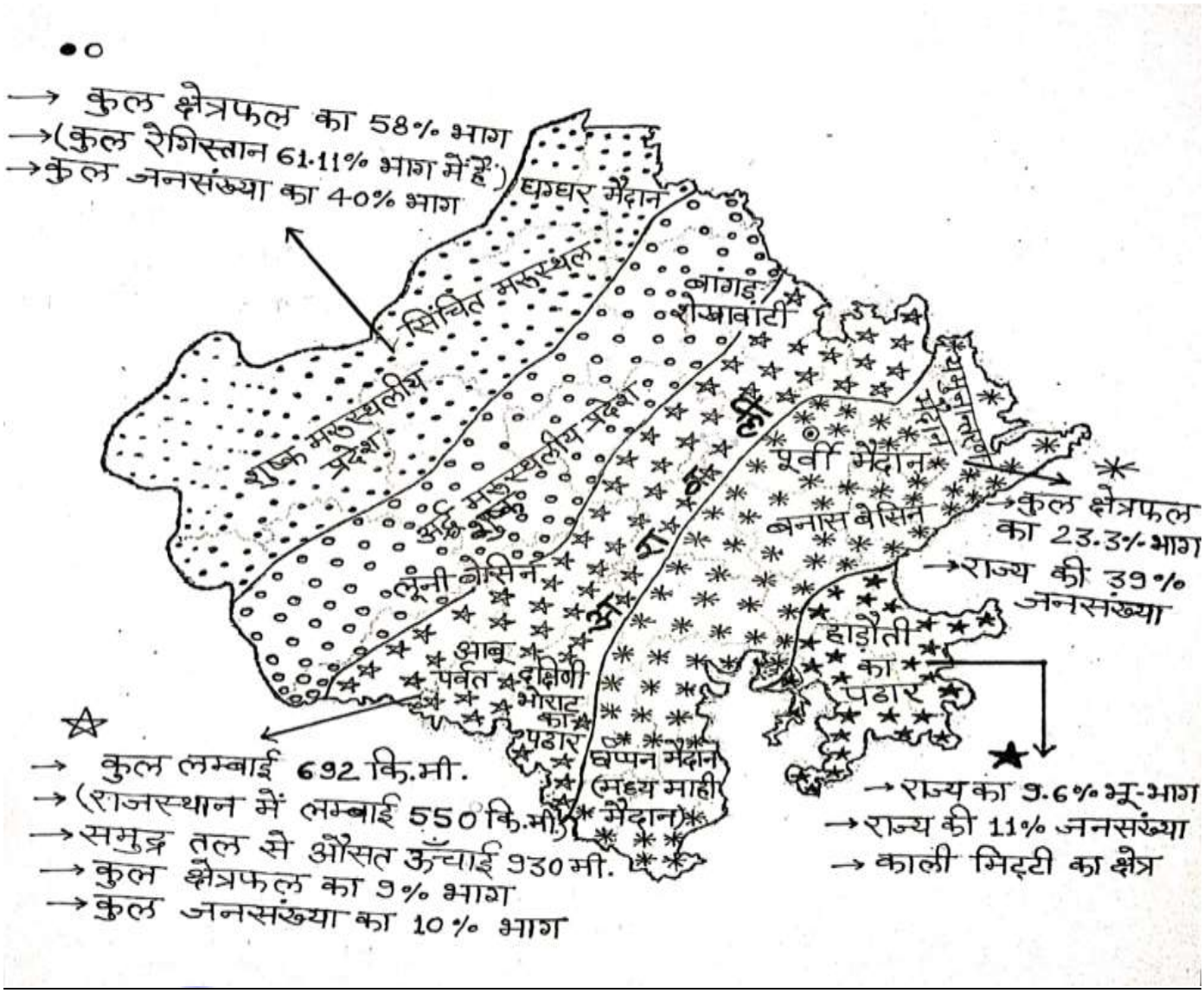

नोटः *– राज्य के सि**रोही जिले में मरुस्थल का विस्तार नहीं है** अर्थात् अरावली के पश्चिम में स्थित **13 जिलों में से सिरोही एक मात्र ऐसा** जिला है, जो मरुस्थलीय जिलों की श्रेणी में शामिल नहीं है।*

- ***थार का रेगिस्तान*** *राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग और पाकिस्तान में सिंध तथा पंजाब तक फैला है।*
- *यह **उत्तर – पश्चिम में 645 किमी० लम्बा और 360 किमी० चौड़ा है** ।*
- *इस का सामान्य ढ़ाल **उत्तर – पूर्व से दक्षिण – पश्चिम** की ओर है ।*
- *मरुस्थल का **ऊँचा उठा हुआ उत्तर -पूर्वी भाग 'थली' तथा दक्षिण-पश्चिम भाग नीचे का 'तली'** कहलाता है।*

*इस मरुस्थलीय क्षेत्र में राज्य की कुल **जनसंख्या का लगभग 40** प्रतिशत हिस्सा निवास करता है।*

*यह **विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला मरुस्थल** है तथा इसके अलावा यह विश्व में सर्वाधिक जैव विविधता वाला मरुस्थल भी है।*

- *थार के मरुस्थल की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ है, कि यह **विश्व का एक मात्र** ऐसा मरुस्थल है, जिसके निर्माण में **दक्षिण पश्चिम मानसूनी हवाओं का मुख्य योगदान** है।*
- *थार का मरुस्थल भारतीय उपमहाद्वीप में ऋतु चक्र को भी नियंत्रित करता है ।*
- *ग्रीष्म काल में तेज गर्मी के कारण इस प्रदेश में न्यून वायु दाब केन्द्र विकसित हो जाता है। जो दक्षिण - पश्चिमी मानसूनी हवाओं को आकर्षित करता है। यह हवायें सम्पूर्ण प्रायद्वीप में वर्षा करती है ।*
- *भारतीय उपमहाद्वीप में मानसून को आकर्षित करने में इस मरुस्थल की उपस्थिति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।*

इस क्षेत्र में शुष्क एवं अत्यंत विषम जलवायु पाई जाती है और तापमान गर्मियों में अत्यधिक (49° C तक) तथा सर्दियों में न्यूनतम (3° C तक) रहता है।

*आँकल जीवाश्म पार्क, जलोद्भिद तलछट व लिग्नाइट, खनिज तेल इत्यादि से इस तथ्य की पुष्टि होती है, कि **थार का मरुस्थल 'पर्माकार्बोनिफेरस युग'** में टेथिस सागर का हिस्सा था।*

नोटः-मरुस्थलीकरण का मूल कारण :-

मरुस्थलीकरण की समस्या सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त है। विश्व की कुल जनसंख्या का छठवाँ हिस्सा मरुस्थलीकरण की समस्या से प्रभावित है।

सन् 1952 में"Symposia on Indian Desert" का आयोजन किया गया जिसमें थार के मरुस्थल की उत्पत्ति पूर्व में इसका विस्तार आदि पर विस्तृत चर्चा की गई है।

क्या होता है मरुस्थलीकरण?

- उपजाऊ एवं अमरुस्थलीय भूमि का क्रमिक रूप शुष्क प्रदेश अथवा मरुस्थल में परिवर्तित हो जाने की प्रक्रिया ही मरुस्थलीकरण है ।
- मरुस्थलीकरण प्रकृति की परिघटना है जो **जलवायवीय परिवर्तन व दोष पूर्ण भूमि उपयोग के कारण होती है।**
- यह क्रम वृद्धि परिघटना है , जिसमें मानव द्वारा भूमि उपयोग पर दबाव के कारण परिवर्तन होने से परितंत्र का अवनयन होता है।

मरुस्थलीकरण का सबसे महत्वपूर्ण कारण-

भूमि का अविवेकी उपयोग

पशुचारन

निरंतर वर्षा में कमी

संसाधनों का अति दोहन

जनसंख्या वृद्धि इत्यादि।

थार का मरुस्थल 'ग्रेट पेलियो आर्कटिक अफ्रीका' मरुस्थल का ही पूर्वी भाग है।

थार के मरुस्थल में स्थित प्रमुख उद्यान 'राष्ट्रीय मरु उद्यान 'है।

मरुभूमि राष्ट्रीय उद्यान

राज्य का मरुस्थल उष्ण मरुस्थल की श्रेणी में आता है ।

इस क्षेत्र की प्रमुख फसलें बाजरा, मोठ, ग्वार, इत्यादि हैं तथा **प्रमुख नदी 'लूनी'** है तथा प्रमुख नहर 'इंदिरा गाँधी 'नहर हैं

इस क्षेत्र में तीन प्रकार का मरुस्थल पाया जाता है

1. इर्ग 2. हम्मादा 3. रैंग'

- **रेतीले मरुस्थल को 'इर्ग' कहा जाता है।**
- **पथरीले मरुस्थल को हम्मादा** कहा जाता है इसका विस्तार जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर व जालौर तक है।
- ऐसा मरुस्थल जि**समें रेत व पत्थर दोनों पाए जाते हैं,** अर्थात् **मिश्रित मरुस्थल को ' रैंग' कहा जाता है।** यह जैसलमेर के निकट रामगढ़ व लोद्रवा क्षेत्रों में पाया जाता है।

प्रसिद्ध जन्तु वैज्ञानिक डॉ. ईश्वर प्रकाश ने कहा है कि राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र को मरु क्षेत्र नहीं कहकर **'रक्ष क्षेत्र'** कहा जाए क्योंकि यहाँ पर पर्याप्त मात्रा में जैव विविधता पाई जाती है।

नोटः- जोधपुर राज्य का एकमात्र ऐसा जिला है जिसमें **सभी प्रकार के बालूका स्तूप** पाये जाते हैं। **तथा सर्वाधिक बालूका स्तूप जैसलमेर जिले में पाए जाते हैं।**

मरुस्थल में पाई जाने वाली प्रमख संरचनाए तथा शब्दावली

1. लाठी सीरीज :- पाकिस्तान देश के सहारे (पास में) **पोकरण से मोहनगढ़ तक की क्षेत्र** लाठी सारिज के नाम से जाना जाता है।

2007 में काजरी के वैज्ञानिकों द्वारा यह स्पष्ट किया गया कि इस क्षेत्र में **80 मीटर लम्बी तथा 60 मीटर चौड़ी एक भू-गर्भिक जल पट्टी** का विस्तार है।

इस क्षेत्र में धामण, करड, अजाण, **लीलोण, सेवण घास मुख्य रूप** से पायी जाती है।

नोटः- सेवण घास का **कटा हुआ रूप लीलण** कहलाता है।

राज्य का राज्य पक्षी **गोडावण अपने अण्डे सेवण घास पर देता** है । इसी कारण **सेवण घास को गोडावण पक्षी की प्रजनन सम्पति** कहा जाता है।

इसी क्षेत्र में जैसलमेर जिले की सम तहसील में चन्दन गाँव में एक **मीठे पानी का जल स्त्रोत** (कुआँ) है। जिस से प्रति घन्टे में लगभग 2.30 लाख लीटर मीठा पानी निकलता है । इसे **चन्दन नलकूप या 'थार का घड़ा'** भी कहा जाता है। इस कुँए का **वास्तविक नाम 'चौहान'** है।

2. पीवणाः- इस क्षेत्र में पाये जाने वाला जहरीला सर्प जो डंक नहीं मारता बल्कि रात्रि में सोते हुए व्यक्ति को श्वांस के द्वारा जहर देकर मारता है।

3. मावठ / महावठ / शीतकालीन वर्षा :- पश्चिमी विक्षोभ तथा भूमध्य सागरीय चक्रवातों से **शीतकाल में होने वाली वर्षा जो रबी की फसल के लिए उपयोगी** होती है **मावठ कहलाती** है।

4. नेहड़ :- लगभग 100 वर्ष पूर्व राज्य के जालौर तथा बाड़मेर जिले में **समुद्र का जल आकर ठहरता** था । अतः जालौर व बाड़मेर जिले का क्षेत्र नेहड़ कहलाता था । नेहड़ का शाब्दिक अर्थ होता है 'समुद्र का जल'।

मरुस्थलीय क्षेत्र में जल संचय के तरीके

1. **आगोरः-** प्राचीन काल में मरुस्थलीय क्षेत्र में वर्षा के **जल का संचय करने के लिये टांके** बनाये जाते थे, जिन्हें आगोर कहा जाता था ।

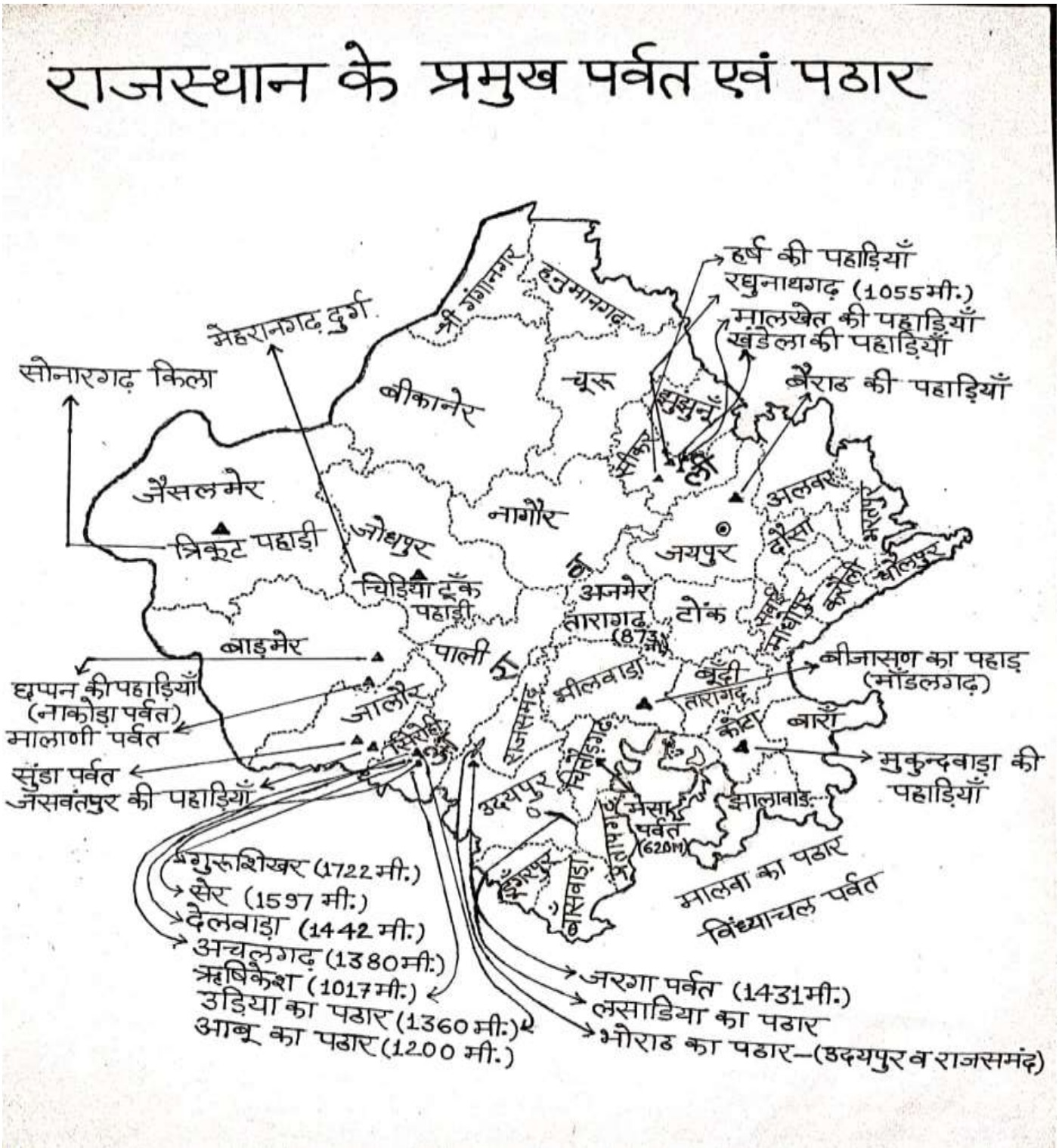

4. अरावली की कुल लंबाई का 79.48% **(लगभग 80%) भाग राजस्थान में** स्थित है जिसका **आकार एक वाद्ययंत्र "तानपुरे"** के समान है। अरावली पर्वतमाला की तुलना अमेरिका मे स्थित अल्पेशियन पर्वतों से की जाती है जो कि लगभग 60 से 55 करोड़ वर्ष पुराने हैं।

5. उत्पत्ति के आधार पर अरावली पर्वतमाला एक **वलित पर्वत** (जिसका विकास हो रहा है) तथा **वर्तमान में एक अवशिष्ट पर्वत है। इसकी औसत ऊँचाई पहले 5000 मीटर** थी जो कि **वर्तमान में 920 मीटर समुद्र तल से** है।

6. अरावली पर्वतमाला का विस्तार राज्य के 17 जिलों में है यह राज्य के लगभग बीच में स्थित है इसलिए राज्य को दो भागों में विभाजित करती है पूर्वी भाग व दक्षिणी भाग।

7. अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में 13 जिले आते हैं जिनमें से 12 में मरुस्थल है और एक जिला ऐसा है जो कि सिरोही है जिसमें मरुस्थल नहीं है अरावली के पश्चिम में लगभग 60% भू - भाग पर राज्य की 40% जनसंख्या निवास करती है।

8. अरावली के पूर्व में राज्य के 20 जिले आते हैं राजस्थान के कुल गैर मरुस्थलीय जिले 21 हैं जिनमें से अरावली के पूर्व में 20 तथा एक सिरोही है।

9. **अरावली का सर्वाधिक विस्तार उदयपुर जिले में है** तथा **सबसे कम विस्तार वाला जिला अजमेर** है और **अरावली पर्वतमाला की सबसे ऊंची चोटी "गुरु शिखर"** है और जब कि **सबसे नीचे चोटी "अजमेर जिले" में पुष्कर घाटी है।**

- **गुरुशिखर जिसे गुरुमाथा** भी कहा जाता है। हिमालय पर्वत के माउंट एवरेस्ट तथा पश्चिमी घाट के नीलगिरी पर्वत के मध्य की सबसे ऊंची चोटी है ।
- **कर्नल जेम्स टॉड** ने यहाँ पर संतों को तपस्या करते हुए देखा था इससे प्रभावित होकर कर्नल जेम्स टॉड ने **इसे संतो का शिखर का नाम दिया है** इसकी **औसत ऊँचाई 1722 मीटर** है।
- इसकी चोटी पर दत्तात्रेय ऋषि का मंदिर बना हुआ है ।
- यदि इस मंदिर की ऊँचाई को शामिल करें तो गुरु शिखर की कुल ऊँचाई 1727 मीटर होती है ।
- गुरुशिखर के नीचे **राज्य का एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल "माउंट आबू" स्थित है।**

10. अरावली पर्वतमाला राज्य की नदियों को दो भागों में विभाजित करती है पश्चिमी भाग और पूर्वी भाग। **अरावली के पश्चिम में बहने** वाली नदियाँ अपना जल **अरब सागर को** तथा अरावली के **पूर्व में बहने वाली नदियाँ** अपना जल **बंगाल की खाड़ी को लेकर** जाते हैं।

11. **अरावली पर्वतमाला पश्चिमी मरुस्थल को पूर्व की ओर बढ़ने से रोकती है** जैसा कि आपको पता है मरुस्थल अभी भी लगातार फैल रहा है।

12. अरावली पर्वतमाला **बंगाल की खाड़ी से आने वाले मानसून को रोककर वर्षा करने में सहायक** भी होती है लेकिन अरावली पर्वतमाला से होने वाला **"सबसे बड़ा नुकसान"** यह है कि अरावली पर्वतमाला की स्थिति **अरब सागर के मानसून के समांतर होने के कारण यह बिना वर्षा किए ही गुजर जाता है** इसी वजह से राजस्थान में बहुत कम वर्षा होती है।

13. अरावली पर्वतमाला में पर्वतीय चट्टानों के टूटने से पर्वतीय मिट्टी का निर्माण होता है एवं जिस **पर्वतीय मिट्टी में चूने की अधिक मात्रा होती है उसे लेटेराइट मिट्टी** कहा जाता है इस प्रकार इस अरावली क्षेत्र में पाई जाने वाली मिट्टी लेटेराइट मिट्टी है।

14. अरावली पर्वतमाला का विस्तार **"दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व" की ओर** है। अरावली पर्वतमाला की चौड़ाई और ऊँचाई लगातार "दक्षिण - पश्चिम से उत्तर - पूर्व" की ओर कम होती जाती है जबकि इसकी चौड़ाई और ऊँचाई "उत्तर - पूर्व से दक्षिण - पश्चिम " की ओर बढ़ती जाती है।

15. अरावली पर्वतमाला एक महान **जल विभाजक** के रूप में भी कार्य करती है इसके दोनों ओर नदियाँ बहती हैं।

16. अरावली पर्वतमाला राज्य के **कुल भू-भाग का 9% भाग** है जिस पर **संपूर्ण राज्य की 10% जनसंख्या निवास करती है।**

17. अरावली पर्वतमाला में मुख्य रूप से ढलान पहाड़ियों पर मक्का की खेती की जाती है इस क्षेत्र में **उष्ण कटिबंधीय वन** पाए जाते हैं क्षेत्र में **कंक्रीट लाल मिट्टी** पाई जाती है।

नोट – अरावली पर्वतमाला को अध्ययन की दृष्टि से मुख्य रूप से तीन भागों में बाँटा गया है -

1. उत्तरी – पूर्वी अरावली 2. मध्यवर्ती अरावली 3. दक्षिणी अरावली

1. **उत्तरी – पूर्वी अरावली –** इस क्षेत्र का विस्तार **जयपुर, दौसा, अलवर,** जिले में है इस क्षेत्र में अरावली की श्रेणियां अनवरत ना होकर दूर - दूर हो जाती है । इस क्षेत्र में पहाड़ियों की सामान्य ऊँचाई 450 मीटर से 700 मीटर तक है इस प्रदेश की **प्रमुख चोटियाँ रघुनाथगढ़ (सीकर) 1055 मीटर,** खोह (जयपुर) 920 मीटर, भेराच (अलवर) 792 मीटर, बरखाड़ा (जयपुर) 786 मीटर है।

2. **मध्यवर्ती अरावली –** इस भाग में अरावली का विस्तार कम पाया जाता है जो कि ब्यावर के समीप है इसकी **सबसे ऊंची चोटी नाग पहाड़ियों में स्थित तारागढ़ (870 मीटर अजमेर) है** इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 550 मीटर है। अरावली का यह भाग कटा - फटा होने के कारण यहाँ **अत्यधिक मात्रा में दर्रे** (स्थानीय भाषा में **नाल कटा** कहा जाता है) पाए जाते हैं जैसे -

भीलवाड़ा की नाल (पाली), सोमेश्वर की नाल पाली), बर दर्रा (पाली)

यह मुख्य रूप से अजमेर, पाली, राजसमंद में स्थित है ।

3. **दक्षिणी अरावली –** यह मुख्य रूप से **सिरोही उदयपुर राजसमंद** में विस्तृत है इसकी **सबसे ऊंची चोटी जरगा चोटी (1448 मीटर उदयपुर में) है ।** इसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 1000 मीटर है। इसमें मुख्य रूप से फुलवारी की नाल (उदयपुर), केवड़ा की नाल (उदयपुर) हल्दीघाटी की नाल (राजसमंद) में प्रमुख दर्रे पाए जाते हैं।

नोट – फुलवारी की नाल वन्य जीव अभ्यारण्य तथा मानसी वाकल बेसिन के लिए प्रसिद्ध है । राज्य में सर्वाधिक नदियों का उद्गम अरावली पर्वत से होता है जबकि **सर्वाधिक नदियाँ कोटा संभाग में बहती हैं।**

चूरू	**-**	**कोई नदी नहीं है**
जयपुर	-	(बाणगंगा, ढूंढ, बांडी, साबी, मोरेल, डाई, सीतामाशी, सखा)
जोधपुर	-	लूनी, जोजरी, मीठड़ी (माठड़ी)
जालौर	-	(सूकड़ी, लूनी, बांडी, जवाई, लीलड़ी)
जैसलमेर	-	काकन (काकनेन), चांथण, लाठी, धोगड़ी,
झुंझुनू	-	काँतली
झालावाड़	-	कालीसिंधी, छोटी कालीसिंध, निवाज, पार्वती, आहू
डूंगरपुर	-	(माही, सोम, सोनी, जाखम)
बाँसवाड़ा	-	माही, चैनी, अन्नास
नागौर	-	लूनी
बाड़मेर	-	लूनी, सूकड़ी
बीकानेर	**-**	**कोई नदी नहीं है**
भरतपुर	-	गंभीर, बराह, बाणगंगा
बूंदी	-	कुराला, घोड़ा पछाड़, मेज, चंबल
सीकर	-	मेंथा, कांटली, कांवत
सिरोही	-	(सूकड़ी, पश्चिम बनास, खारी कृष्णावती, भूला, पोसलिया, ओरा, सुखदा)
भीलवाड़ा	-	बनास, बेड़च, कोठारी, मानसी, खारी, मेनाली
सवाई माधोपुर	-	बनास, चंबल, मोरेल
धौलपुर	-	चंबल
दौसा	-	बाणगंगा, मोरेल
बारां	-	पार्वती, परवन, कुकू
राजसमंद	-	बनास, चंद्रभान, खारी, कोठारी
हनुमानगढ़	-	घग्घर
करौली	-	चंबल, भद्रावती, गंभीर
प्रतापगढ़	-	जाखम, सूकली, भैरवी

<u>शोर्ट ट्रिक</u>

भरतपुर जिले में बहने वाली नदियाँ हैं।

"स्पा बाग"

सूत्र	**-**	**नदियाँ**
स्पा	-	स्पारेल
बा	-	बाणगंगा
ग	-	गम्भीर

राजस्थान के दौसा जिले की मुख्य नदियाँ:-

"दौसा मे बाण मारे"

सूत्र	**-**	**नदियाँ**
बाण	-	बाणगंगा
मारे	-	मोरेल

राजस्थान के राजसमंद जिले की मुख्य नदियाँ:-

"राजसमन्द चन्द्र खारा"

सूत्र	-	नदियाँ
चन्द्र	-	चन्द्रभागा
खारा	-	खारी

राजस्थान क के टोंक जिले की मुख्य नदियाँ:-

"टोंक में बाण्डी मांस बना"

सूत्र	-	नदियाँ
बांडी	-	बांडी
मांस	-	मांसी
बना	-	बनास

- ***राजस्थान की प्रमुख झीलें –***

प्रिय छात्रों राजस्थान की झीलों को हम दो भागों में विभाजित करेंगे -

(अ)खारे पानी की झीलें, (ब) मीठे पानी की झीलें

- दोस्तों जैसा कि आपको पता है खारे पानी की झील से आशय ऐसी झील से होता है जिसमें लवणता की मात्रा होती है और मीठे पानी की झील अर्थात् एक ऐसी झील जिसमे लवणता की मात्रा नहीं पाई जाती है ।
- ***अरावली पर्वतमाला राजस्थान के लगभग बीच में स्थित है जिसके पश्चिम में खारे पानी की झीलें हैं और इसके पूर्व में मीठे पानी की झीलें स्थित है ।***
- यह अरावली पर्वतमाला महान जल विभाजक रेखा का कार्य करती है । ***राजस्थान में खारे पानी की ९ झीलें हैं।***
- राजस्थान का पश्चिमी भाग ***टेथिस सागर*** का अवशेष है अतः इस क्षेत्र में पाई जाने वाली झीलें ***खारे पानी की झीलें*** है ।
- रेगिस्तानी क्षेत्र में खारे पानी की झीलों को ***प्लाया*** कहा जाता है तथा ***तटीय क्षेत्र में इन्हें 'लैगून" कहा*** जाता है

जैसे उड़ीसा में स्थित चिल्का झील सबसे बड़ी लैगून झील है।

- दोस्तों झीलों के खारा होने का एक अन्य कारण यह भी है कि दक्षिण पश्चिमी मानसून की अरब सागर की शाखा राज्य में प्रवेश करते समय लवण के भारी कणों को पश्चिमी भाग में गिरा देती है जिससे यहाँ की मिट्टी तथा झीलों में खारा पानी पाया जाता है ।
- राजस्थान की समस्त खारे पानी की झीलें वायु द्वारा निर्मित हैं ।
- दक्षिण एशिया में पहली बार विश्व झील सम्मेलन का आयोजन 28 अक्टूबर से 2 नवंबर 2007 को जयपुर में किया गया था।

अब हम खारे पानी की झीलों को सबसे पहले विस्तार में समझते हैं और फिर मीठे पानी की झीलों को पढ़ेंगे।

(अ) खारे पानी की झीलें –

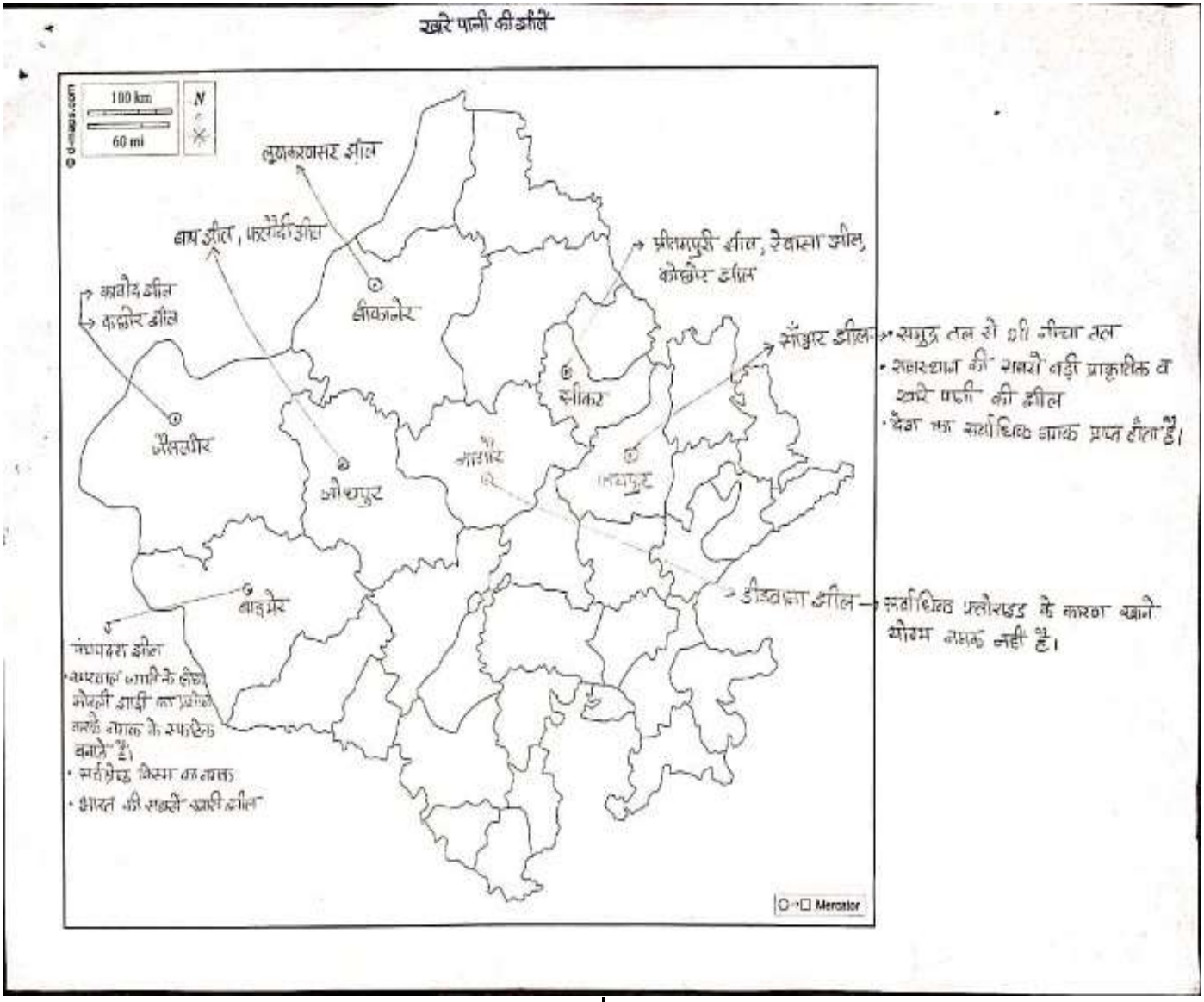

I. सांभर झील

- **राजस्थान के जयपुर – फुलेरा मार्ग पर जयपुर से लगभग 65 किलोमीटर दूर स्थित सांभर झील भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक एवं खारे पानी की झील है।**
- इस झील का विस्तार 3 जिलों में है - **जयपुर, अजमेर और नागौर,** लेकिन सर्वाधिक विस्तार जयपुर जिले में है और इसका प्रशासनिक अधिकार नागौर जिले का है।
- इस झील की लंबाई दक्षिण - पूर्व से उत्तर - पश्चिम की ओर लगभग 32 किलोमीटर है और चौड़ाई लगभग 3 से 12 किलोमीटर है इसका कुल अपवाह क्षेत्र लगभग 500 वर्ग किलोमीटर है।
- **सांभर झील में मेंथा नदी, रूपनगढ़ नदी, खारी नदी और खंडेला नदी आकर मिलती हैं । इस झील पर भारत सरकार की "हिंदुस्तान साल्ट लिमिटेड कंपनी" द्वारा नमक उत्पादन कार्य किया** जा रहा है । इस झील में प्रति 4 मीटर की गहराई पर 350 लाख टन नमक उत्पादन

होता है जो **भारत के कुल उत्पादन का 8.7% सांभर झील** से ही उत्पादित होता है।

इस झील से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण तथ्य -

- **सांभर झील "स्वाईसरुबीना" नामक शैवालों के लिए प्रसिद्ध है ।** इस शैवाल से 60% प्रोटीन प्राप्त होता है।
- यह झील अन्य महत्वपूर्ण बिन्दुओं के लिए भी जानी जाती है जैसे -
- तीर्थ स्थली देव्यानी अर्थात् **तीर्थों की नानी,**
- शाकंभरी माता का मंदिर,
- संत हमीदुद्दीन की पुण्य भूमि,
- जहाँगीर की ननिहाल,
- अकबर की विवाह स्थली
- चौहानों की राजधानी

- ऐसा माना जाता है कि **इस झील का निर्माण बिजोलिया शिलालेख के अनुसार चौहान वंश के संस्थापक वासुदेव चौहान द्वारा** करवाया गया था।
- इस झील का आकार आयताकार है इस झील पर सन् 1857 में अंग्रेजों द्वारा स्थापित सांभर साल्ट म्यूनियम स्थित है।
- **पर्यटन के क्षेत्र में रामसर साइट के नाम से भी इसे जाना जाता है।**

प्रश्न – 3. राजस्थान की किस झील को रामसर आर्द्रभूमि की सूची में सम्मिलित किया गया है?

A. जयसमंद झील

B. आनासागर झील

C. राजसमंद झील

D. सांभर झील

उत्तर - (D)

2. पचपदरा झील -

- ऐसा माना जाता है कि 400 ईसा पूर्व पंचा नामक एक भील व्यक्ति के द्वारा एक दलदल को सुखाकर इस झील के आसपास की बस्तियों का निर्माण करवाया गया था इसलिए इस झील को पचपदरा झील कहते हैं
- यह झील राजस्थान **राज्य के बाड़मेर जिले के बालोतरा में स्थित है।**
- इस झील से प्राचीन समय से ही **खारवाल जाति के 400 परिवार मोरली वृक्ष की टहनियों से भी नमक के (क्रिस्टल) स्फटिक तैयार** करते थे।
- **इस झील में 18% सोडियम क्लोराइड की मात्रा पाई जाती है इस झील का नमक खाने के लिए सबसे उपयुक्त है।**

3. डीड़वाना झील -

- यह झील **नागौर जिले के डीड़वाना** में स्थित है।
- डीड़वाना में लवणीय पानी की क्यारियाँ बनाकर उसे सुखाकर नमक प्राप्त किया जाता है। **इस नमक ब्राइन नमक** कहा जाता है। इस झील से प्राप्त नमक **खाने योग्य नहीं** है।
- इस झील में राजस्थान सरकार द्वारा **राजस्थान स्टेट केमिकल वर्क्स नामक दो उद्योग** स्थापित किए गए हैं जो **कृत्रिम रूप से कागज के उत्पादन का निर्माण करते हैं ।** इसके अलावा इस नमक का उपयोग चमड़ा उद्योग में भी होता है।
- कृत्रिम रूप से कागज का उत्पादन करने के लिए **सोडियम सल्फेट का निर्माण इसी झील के** द्वारा किया जाता है।
- इस झील का क्षेत्रफल 5 वर्ग किलो मीटर है।
- यहाँ का नमक विभिन्न रासायनिक क्रियाओं में प्रयुक्त होता है।
- Na_2SO_4 वाले नमक का उपयोग चमड़ा साफ करने में, कागज गलाने में किया जाता है ।

5. लूणकरणसर झील -

- यह झील राजस्थान के **बीकानेर जिले में** स्थित अत्यंत छोटी झील है।
- छोटी होने के कारण यहाँ से थोड़ी बहुत मात्रा में निकलने वाले नमक से स्थानीय लोगों को ही आपूर्ति हो पाती है।
- **लूणकरणसर "मूंगफली" के लिए प्रसिद्ध होने के कारण "राजस्थान का राजकोट"कहलाता है।**

राजस्थान में अन्य खारे पानी की झीलें निम्न है :-

- रेवासा झील सीकर में स्थित है।
- तालछापर झील चूरू में स्थित है ।
- **डेगाना झील नागौर में स्थित है।**
- फलौदी झील जोधपुर में स्थित है ।
- कावोद झील जैसलमेर में स्थित है।
- पोकरण झील जैसलमेर में स्थित है ।
- कुचामन झील नागौर में स्थित है इत्यादि ।

(ब) राजस्थान में मीठे पानी की झीलें –

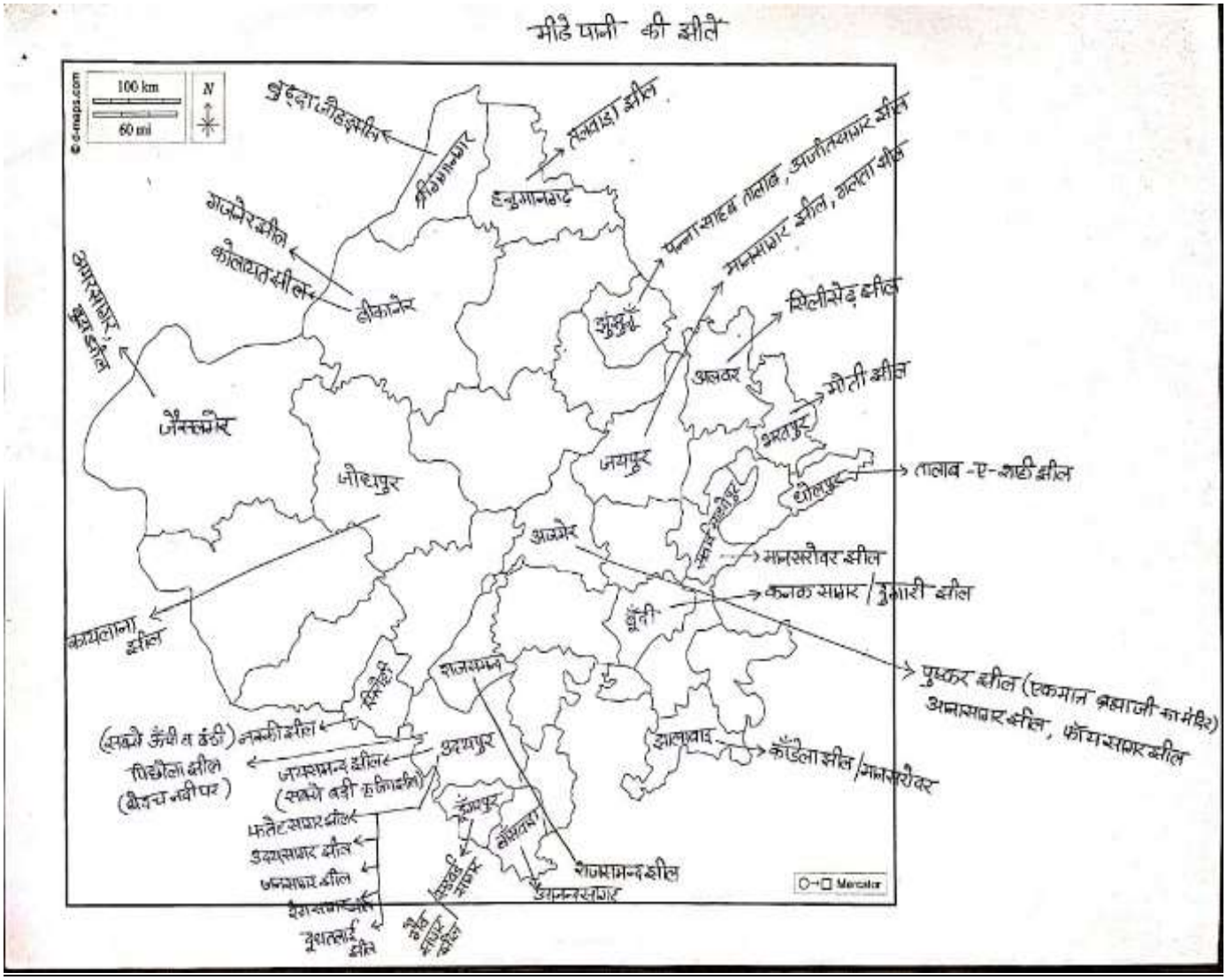

शोर्ट ट्रिक

राजस्थान की मीठे पानी की झीलों के नाम:-

"जयराज, अना, नडीसि कोका फतेह कर"

सूत्र		झीलें
जय	-	जयसमन्द झील
राज	-	राजसमन्द झील
अना	-	अनासागर झील
न	-	नक्की झील
डी	-	डीड़वाना झील
सि	-	सिलिसेढ़ झील
को	-	कोलायत झील
का	-	कायलाना झील
फतेह	-	फतेहसागर झील

विस्तृत वर्णन -

I. पुष्कर झील –

- राजस्थान राज्य के **अजमेर जिले के पुष्कर नामक स्थान पर** (अजमेर शहर से 11 किलो मीटर दूर) स्थित पुष्कर झील एक प्रसिद्ध झील है।
- ऐसा माना जाता है कि इस झील **का निर्माण पुष्करणा ब्राह्मणों द्वारा** करवाया गया था इसलिए इस झील का नाम "पुष्कर झील" पड़ा, **लेकिन भौगोलिक मान्यताओं के अनुसार इस झील का निर्माण ज्वालामुखी से हुआ है इसलिए इसे क्रेटर झील भी कहा जाता है।**
- **यह राजस्थान की प्राचीन, प्राकृतिक एवं सबसे पवित्र झील है।**
- **इस झील के किनारे प्रसिद्ध ब्रह्माजी का मंदिर स्थित है** ऐसा माना जाता है कि ब्रह्माजी मंदिर में मूर्ति आद्यगुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित की गई थी। इस मंदिर का निर्माण दसवीं सदी में पंडित गोकुल चंद पारीक ने करवाया था।

6. पुष्कर पशु मेला

कार्तिक माह मे आयोजित होता हैं। इस मेले का आयोजन **पुष्कर (अजमेर)** में किया जाता हैं। गिर नस्ल से संबंधित हैं।

7. गोगामेड़ी पशु मेला

नोहर (हनुमानगढ़) में आयोजित होता हैं। इस मेले का आयोजन श्रावण पूर्णिमा से भाद्रपद पूर्णिमा में होता हैं। हरियाणवी नस्ल से संबंधित हैं। राजस्थान का सबसे लम्बी अवधि तक चलने वाला पशु मेला हैं।

8. महाशिवरात्रि पशु मेला

करौली में फाल्गुन मास में आयोजित होता हैं। हरियाणवी नस्ल से संबंधित हैं।

9. जसवंत प्रदर्शनी एवं पुश मेला

इस मेले का आयोजन आश्विन मास में होता हैं। हरियाणवी नस्ल से संबंधित हैं।

10. श्री मल्लीनाथ पशु मेला

- तिलवाड़ा (बाड़मेर) में इस मेले का आयोजन होता हैं।
- यह मेला चैत्र कृष्ण ग्यारस से चैत्र शुक्ल ग्यारस तक लूनी नदी के तट पर आयोजित किया जाता हैं।
- थारपारकर (मुख्यतः) व कांकरेज नस्ल की बिक्री होती हैं।
- देशी महीनों के अनुसार सबसे पहले आने वाला पशु मेला हैं।

11. बहरोड़ पशु मेला

बहरोड़ (अलवर) में आयोजित होता हैं। मुर्रह भैंस का व्यापार होता हैं।

12. बाबा रघुनाथ पुरी पशु मेला

सांचैर (जालौर) में आयोजित होता हैं।

13. सेवडिया पशु मेला

रानीवाड़ा (जालौर) में आयोजित होता हैं। रानीवाड़ा राज्य की सबसे बड़ी दुग्ध डेयरी हैं।

"सारांश"

- राजस्थान में 20 वीं पशुगणना 2019 के अनुसार कुल पशुधन 5.68 करोड़ हैं। इस पशुगणना में पशुओं की संख्या में 1.66 प्रतिशत कमी पायी पायी ।
- राजस्थान पशुओं की संख्या में भारत के अंतर्गत दूसरे स्थान पर हैं। प्रथम स्थान पर उत्तर प्रदेश हैं।
- ऊँटों की संख्या में राजस्थान प्रथम स्थान पर हैं।
- गौवंश की संख्या में छठवें स्थान पर हैं, तथा भैंसों की संख्या में राजस्थान द्वितीय पर हैं।
- राजस्थान गधों की संख्या में प्रथम स्थान पर हैं।
- राठी नस्ल की गाय को राजस्थान की कामधेनु कहा जाता हैं।
- मुर्रह नस्ल की भैंस सर्वश्रेष्ठ नस्ल हैं, तथा राजस्थान में सर्वाधिक पायी जाती हैं।
- भेड़ों की संख्या में राजस्थान तीसरे स्थान पर हैं, तथा सर्वाधिक भेड़ बाड़मेर में पायी जाती हैं।
- भेड़ की मगरा नस्ल को बीकानेरी चोकला भी कहा जाता हैं।
- बकरी की संख्या में राजस्थान प्रथम स्थान हैं। बाड़मेर, जोधपुर में सर्वाधिक बकरियाँ पायी जाती हैं।
- जैसलमेरी नस्ल के ऊँट को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता हैं।
- केन्द्रीय ऊँट अनुसंधान संस्थान जोहड़बीड़ (बीकानेर) में हैं। केन्द्रीय बकरी एवं भेड़ अनुसंधान संस्थान अविकानगर (टोंक) में हैं।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न :-

1. चोकला, मगरा, पूगल किस पशु की नस्ल हैं?

a. बकरी b. भेड़
c. गाय- बैल d.ऊँट

उत्तर – B

2. राजस्थान में भेड़ – ऊन शिक्षण संस्थान कहाँ हैं?

a. बीकानेर b. जोधपुर
c. बाड़मेर d. जयपुर

उत्तर – D

3. केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान स्थापित हैं?

a. बीकानेर b. जैसोल
c. अविकानगर (टोंक) d. जैसलमेर

उत्तर – C

4. डेयरी एवं खाद्य विज्ञान प्रौद्योगिकी महाविद्यालय राजस्थान का एकमात्र महाविद्यालय कहाँ स्थित हैं?

a. जोधपुर b. जयपुर
c. कोटा d. उदयपुर

उत्तर - D

5. थारपारकर नस्ल के गौवंश का उत्पत्ति स्थल माना जाता हैं?

a. मालाणी b. हरियाणा
c. श्रीगंगानगर d. दरीबा

उत्तर – A

6. राज्य मंत्रिमंडल में पशुधन विकास नीति की घोषणा की-

a. 17 फरवरी 2010 b. 26 जनवरी 2010

c. 15 अगस्त 2010 d. 1 अप्रैल 2010

उत्तर – A

7. मालाणी नस्ल किसकी है?

a. गाय b. ऊँट

c. घोड़ा d. भैंस

उत्तर – C

8. थारपारकर प्रजाति कहाँ पाई जाती है?

a. जनजाति क्षेत्र

b. हाड़ौती क्षेत्र

c. तोराबाटी क्षेत्र

d. राजस्थान के सीमावर्ती क्षेत्र

उत्तर – D

9. दुग्ध उत्पादन हेतु गाय की प्रसिद्ध नस्लें हैं -

a. थारपारकर एवं राठी

b. राठी एवं नागौरी

c. मालवी एवं थारपारकर

d. मेवाती एवं मालवी

उत्तर – A

10. राजस्थान में किस पशुधन का सर्वाधिक प्रतिशत है?

a. बकरियाँ b. भेड़

c. दुधारू पशु d. ऊँट

उत्तर - A

अध्याय – 9

प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ एवं जल संरक्षण तकनीकें

इस अध्याय के अंतर्गत हम राजस्थान की नदी घाटी परियोजनाओं का विस्तार से अध्ययन करेंगे ।जैसा कि आपको पता है जल ही जीवन है जैसे कि सिंधु घाटी सभ्यता जल की वजह से ही सिंधु और उसकी सहायक नदियों के आसपास पनप रही थी । जल जहाँ भी होगा वहाँ एक अच्छी वनस्पति, जीव, जंतु पनपते हुए देखते हैं।

नदियाँ जल का प्राकृतिक स्रोत होती हैं और इन्हीं नदियों के माध्यम से सिंचाई, पेयजल, विद्युत उत्पादन जैसी सुविधाएँ प्राप्त की जाती हैं । इसीलिए नदियों पर परियोजनाएँ बनाई जाती हैं।

राजस्थान में सिंचाई की अधिक आवश्यकता होती है क्योंकि यहाँ की भूमि शुष्क हैं और वर्षा कम होती है ।

सिंचाई-

- फसलोंत्पादन में जल के अभाव में पौधे को जीवन असम्भव होता है ।
- पौधों को जीवनकाल में अधिक मात्रा में जल की आवश्यकता होती है ।
- प्राकृतिक रुप से जल की आवश्यकता पूर्ति नहीं हो पाती है ।तब पौधे की वृद्धि एवं विकास के लिए कृत्रिम रुप से पानी की व्यवस्था करनी पड़ती है, जिसे सिंचाई कहते हैं ।
- राजस्थान एक कृषि प्रधान राज्य है यहाँ की लगभग 70% जनसंख्या कृषि पर आधारित है ।
- राजस्थान की भौगोलिक स्थिति के आधार पर वर्षा की कमी के कारण बलूई मिट्टी में सिंचाई की अत्यधिक आवश्यकता होती है ।
- राजस्थान में भारत के औसत वर्षा का लगभग आधे से भी कम औसत वर्षा होती है।

सिंचाई की विशेषताएँ -

- सिंचाई से कृषि उत्पादन में वृद्धि होती है।
- सिंचाई के द्वारा 1 वर्ष में । से अधिक फसलों का उत्पादन किया जा सकता है।
- जिन स्थानों पर कृषि के कृत्रिम तरीके उपलब्ध नहीं होते उन स्थानों पर कृषि सीमित होती है लेकिन जिन स्थानों पर उपलब्ध होते हैं वहाँ पर कृषि अर्थव्यवस्था की विशेषता बन जाती है।
- सिंचाई कृषि को स्थायित्व प्रदान करती हैं लेकिन जिन स्थानों पर किसान वर्षा पर आधारित होते हैं उन स्थानों पर ***कृषि मानसून का जुआ*** बन जाता है।
- राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है जिसका कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है ।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKj14nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gz2fJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/gd17e6

Online order - https://bit.ly/agri-notes

Call करें - 9887809083

whatsapp-https://wa.link/gd17e6 2 web.- https://bit.ly/agri-notes

FREE SAMPLE